Master Semester-III 2024-2026 -- Date- 07/08/2025

The contribution of Wertheimer as a Gestalt Psychology – जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय में अनुसंधान करने वाले व्यक्तियों में वर्दीमर का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इनके साथ-साथ और कोलर और कोफ्का का अनुसंधान भी सराहनीय रहा है। इन लोगों ने 1912 ई० में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की नींव डाली थी। वर्दीमर ने अपने प्रयोगों के खोज के लिए आविष्कार नहीं है। बल्कि किसी व्यक्ति के मुक्त मन की अभिव्यक्त करने के लिए यह खोज किया जाता है। इनका जन्म 1880 ई० में हुआ था, सर्वप्रथम इन्होंने 1911-12 के आसपास गति से संबंधित प्रयोग किया था, जिसमें इन्होंने अपने मित्रों के रूप में प्रयोग किया था, इन प्रयोगों के माध्यम से वे देखने की गति का स्पष्ट करने की विधि की खोज करना चाहते थे, अतः इसके लिए उन्होंने व्यक्तियों की सहायता लिया, इन प्रयोगों के माध्यम से इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि दो समान वस्तुओं के प्रस्तुतीकरण के समय में का अन्तर होने के कारण इनमें गति का आभास होने लगता है। इस प्रकार प्रस्तुत किया जाए कि उनके अन्तर की कमी समाप्त हो जाए तो उनमें गतिशीलता का आभास होता है। एक साथ प्रस्तुत किया जाता है तो उसमें गतिशीलता आ जाती है तो सभी भिन्न एवं एक भिन्न के रूप में दिखाई देता है। वर्दीमर ने अपने इस प्रयोग से यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि उसकी विभिन्नता एवं पृथकत्व नष्ट हो जाती है, इस प्रकार के गति के आभास को वर्दीमर ने फाई प्रतिभास कहा है।

अतः वर्दीमर के समक्ष दूसरी महत्वपूर्ण समस्या यह थी कि इस प्रकार की गतिशीलता का भ्रम किस कारण होता है। लगातार किसी के बीच रहने वाले इस प्रकार सिद्ध होते हैं।

वर्दीमर ने इन समस्याओं के समाधान हेतु कई अनुसंधान किये, जिसमें यह सिद्ध किया कि अनुभवों में उन्होंने लाइटों से प्रयोग किया तथा इन्हें एक ही पंक्ति में रखते किया, लेकिन इस पंक्ति की बत्तियों एक दूसरे तरफ आभासी गति उत्पन्न हो जा सकती थी, इस प्रयोग में उन्होंने पहले एक पंक्ति दिखलाई फिर दूसरी पंक्ति दिखलाई दर्शकों को ये दोनों लाइनें अलग-अलग दिखती थी क्योंकि दोनों लाइनों के दिखाने की अवधि अधिक थी, धीरे-धीरे उन्होंने इस अवधि को घटाकर 1/10 सेकेंड कर दिया तो दो लाइनों की जगह लाइनों को एक ही लाइन दिखाई देने लगी, इसके आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि गति संवेदना का अंश है। वर्दीमर ने इसी तरह का प्रयोग स्ट्रोबोस्कोप के संबंध में किया, इन प्रयोगों के लिए वर्दीमर ने दो लाइनों से प्रयोग किया, जो लाइनें एक-दूसरे के समानान्तर हो रही हैं। यदि, जो इसकी रोशनी चलती थी, इन्हें प्रयोगों लाइनों के सामने प्रस्तुत की गई थी, स्ट्रोबोस्कोप के सामने इन अवधि क्रमशः कम की जाती है। जब स्ट्रोबोस्कोप के सामने 30 मिलीसेकेंड कर दिया जाता है, तो रेखायें गति तो कोई वास्तविक उनमें दिखलाई देती थी। यदि समानान्तर और जब समय का अन्तर 60 मिलीसेकेंड कर दिया जाता था, तो ये रेखायें आगे पीछे चलती हुई नजर आती थी, 1200 मिलीसेकेंड तक रेखायें अलग अलग दिखाई देती थी, इस तरह कहा जा सकता है। कि स्ट्रोबोस्कोप के सामने का अन्तर उनकी स्थिति को निर्धारित करता है।

इन प्रयोगों के आधार पर वर्दीमर ने समानान्तर अभिक्रिया से संबंधित प्रतिवेदन दिये थे, जिसमें निष्कर्ष निकालकर उन्होंने कहा कि निरन्तर अभिक्रिया के अलावा कुछ नहीं होती था। वर्दीमर ने इस विषय पर नाना पुस्तकों की रचना की जो उनके साथ - गेस्टाल्टवाद सिद्धांत को प्रभावी प्रस्तुत करता है

[illegible] 09/04/2026